रुचिरा

तृतीयो भागः

अष्टमवर्गाय संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
जनवरी 2008 माघ 1929

पुनर्मुद्रण
जनवरी 2008 पौष 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
जनवरी 2011 माघ 1932
जनवरी 2012 माघ 1933
अक्तूबर 2012 आश्विन 1934
अक्तूबर 2013 आश्विन 1935

PD 350T RPS

₹ 50.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा पेलिकन प्रैस, ए-45, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़-II, नयी दिल्ली 110 028 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-810-2

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 — फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 — फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 — फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 — फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगांव
गुवाहाटी 781021 — फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*अशोक श्रीवास्तव*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*शिव कुमार*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*गौतम गांगुली*
मुख्य संपादक (संविदा सेवा)	:	*नरेश यादव*
सहायक उत्पादन अधिकारी	:	*अब्दुल नईम*

आवरण
करन चड्ढा

चित्रांकन
दुर्गा बाई व्याम

पुरोवाक्

2005 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखायाम् अनुशंसितं यत् छात्राणां विद्यालयजीवनं विद्यालयेतरजीवनेन सह योजनीयम्। सिद्धान्तोऽयं पुस्तकीयज्ञानस्य तस्याः परम्परायाः पृथक् वर्तते, यस्याः प्रभावात् अस्माकं शिक्षाव्यवस्था इदानीं यावत् विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्ये अन्तरालं पोषयति। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकानि अस्य मूलभावस्य व्यवहारदिशि प्रयत्न एव। प्रयासेऽस्मिन् विषयाणां मध्ये स्थितायाः भित्तेः निवारणं ज्ञानार्थं रटनप्रवृत्तेश्च शिथिलीकरणमपि सम्मिलितं वर्तते। आशास्महे यत् प्रयासोऽयं 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-शिक्षा-नीतौ अनुशंसितायाः बालकेन्द्रित-शिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय भविष्यति।

प्रयत्नस्यास्य साफल्यं विद्यालयानां प्राचार्याणाम् अध्यापकानाञ्च तेषु प्रयासेषु निर्भरं यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभूत्या ज्ञानमर्जयितुं, कल्पनाशीलक्रियाः विधातुं, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अस्माभिः अवश्यमेव स्वीकरणीयं यत् स्थानं, समयः, स्वातन्त्र्यं च यदि दीयेत, तर्हि शिशवः वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारः निर्धारित-पाठ्यपुस्तकमेव इति विश्वासः ज्ञानार्जनस्य विविधसाधनानां स्रोतसां च अनादरस्य कारणेषु मुख्यतमम्। शिशुषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् शिशून् शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकत्वेन एव।

इमानि उद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिक-समय-सारण्यां परिवर्तनशीलत्वम् अपेक्षितं तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परता आवश्यकी येन शिक्षणार्थं नियतेषु कालेषु वस्तुतः शिक्षणं भवेत्। शिक्षणस्य मूल्याङ्कनस्य च विधयः ज्ञापयिष्यन्ति यत् पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूत्यर्थं कियत् प्रभावि वर्तते, न तु नीरसतायाः साधनम्। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध-कालदृष्ट्या च विभिन्नेषु स्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, विस्मयस्य, लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च कृते प्राचुर्येण अवसरं ददाति। पाठ्यपुस्तकस्यास्य विकासाय विशिष्टयोगदानाय राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद् भाषापरामर्शदातृसमितेः अध्यक्षाणां

प्रो. नामवरसिंहमहोदयानां, संस्कृतपाठ्यपुस्तकानां मुख्यपरामर्शकानां प्रो. राधावल्लभत्रिपाठि-महाभागानां, पाठ्यपुस्तकनिर्माणसमितेः सदस्यानाञ्च कृते हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयति। पुस्तकस्यास्य विकासे नैके विशेषज्ञाः अनुभविनः शिक्षकाश्च योगदानं कृतवन्तः, तेषां संस्थाप्रमुखान् संस्थाश्च प्रति धन्यवादो व्याह्रियते। मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयस्य माध्यमिकोच्चशिक्षाविभागेन प्रो. मृणालमिरी प्रो. जी.पी. देशपाण्डेमहोदयानाम् आध्यक्षे संघटितायाः राष्ट्रिय-पर्यवेक्षणसमितेः सदस्यान् प्रति तेषां बहुमूल्ययोगदानाय वयं विशेषेण कृतज्ञाः।

पाठ्यपुस्तकविकासक्रमे उन्नतस्तराय निरन्तरं प्रयत्नशीला परिषदियं पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं कर्तुं विशेषज्ञैः अनुभविभिः अध्यापकैश्च प्रेषितानां सत्परामर्शानां सदैव स्वागतं विधास्यति।

नयी दिल्ली
30 नवम्बर 2007

निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद्

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली।

मुख्य परामर्शक

राधावल्लभ त्रिपाठी, *अध्यक्ष*, संस्कृत विभाग, हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश।

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष*, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

सदस्य

ज्ञानदेवमणि त्रिपाठी, *सहायक निदेशक*, सीमैट, एस.सी.ई.आर.टी, पटना, बिहार।

पंकज कुमार मिश्र, *प्रवक्ता संस्कृत*, सेन्ट स्टीफेन्स कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-7

राघवेन्द्र प्रपन्न, *प्रवक्ता*, एम.वी. कॉलेज ऑफ एजुकेशन, गीता कॉलोनी, दिल्ली-31

नारायण दाश, *प्रवक्ता संस्कृत*, रामकृष्ण मिशन आवासीय महाविद्यालय, नरेन्द्रपुर, कोलकाता।

संगीता गुंदेचा, *प्रवक्ता संस्कृत*, तुलनात्मक भाषा तथा संस्कृति विभाग, बरकतउला विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश।

पूर्वा भारद्वाज, निरंतर, नयी दिल्ली।

पुरुषोत्तम मिश्र, *पी.जी.टी.* संस्कृत, रा. व. मा. बा. विद्यालय नं. 1, मॉडल टाउन, दिल्ली।

टीकाराम त्रिपाठी, *पी.जी.टी.* संस्कृत, शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश।

सुगन्ध पाण्डेय, *टी.जी.टी.* संस्कृत, केन्द्रीय विद्यालय, काशीपुर, उधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड।

कमलेश महता, टी.जी.टी. संस्कृत, सर्वोदय कन्या विद्यालय, महिपालपुर, दिल्ली।

सदस्य एवं समन्वयक

रणजित बेहेरा, *प्रवक्ता संस्कृत*, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् उन सभी विषय-विशेषज्ञों एवं शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दिया है।

परिषद् प्रोफ़ेसर उमाशंकर शर्मा ऋषि, सेवानिवृत, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना एवं डॉ. अष्टभुजा शुक्ल, प्रवक्ता संस्कृत, संस्कृत महाविद्यालय, चित्राखोर, बरहुआ, वस्ती, उत्तर प्रदेश की आभारी है जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना यथासम्भव योगदान दिया है।

परिषद् प्रोफ़ेसर रामकरण शर्मा, पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी तथा दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा एवं डॉ. श्रीधर भास्कर वर्णेकर के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है जिनकी रचनाओं से इस पुस्तक में पाठ्य-सामग्री ली गई है।

पुस्तक निर्माण में सहयोग के लिए परशराम कौशिक, *प्रभारी,* कम्प्यूटर स्टेशन, भाषा विभाग; दुर्गा देवी, *प्रूफ़ रीडर* एवं कमलेश आर्य, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* धन्यवाद के पात्र हैं।

भूमिका

संस्कृत भाषा में प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, कला, दर्शन, विज्ञान आदि विषयों की अभिव्यक्ति होती रही है। भारतवर्ष का विशाल भूभाग विविधताओं से भरा हुआ है। इसमें भावनात्मक एकता की सदा प्रवाहित होने वाली धारा संस्कृत के माध्यम से जानी जा सकती है। विविध भारतीय भाषाओं पर भी संस्कृत के व्याकरण तथा वाक्य-रचना का प्रभाव परिलक्षित होता है। परस्पर सहयोग, त्याग, सत्य, अहिंसा, राष्ट्रभक्ति, विश्वबन्धुत्व आदि में निहित साहित्य का नैतिक महत्त्व आज पूर्व की अपेक्षा अत्यधिक माना जाता है। इन सबके विकास के लिए संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है। आधुनिक संस्कृत रचनाएँ समाज के उपेक्षित समुदाय के प्रति भी उदारतापूर्वक मुखर हैं। इससे संस्कृत का महत्त्व वस्तुतः बढ़ गया है।

सम्प्रेषणात्मक उपागम के आधार पर संस्कृत के शिक्षण को विद्यालय स्तर पर सुगम, रुचिकर तथा सुग्राह्य रूप में प्रस्तुत करने के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार स्वीकृत पाठ्यक्रम के क्रम में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्त्वावधान में संस्कृत की नवीन पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की योजना प्रारम्भ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत भाषा-विभाग द्वारा उच्चप्राथमिक स्तर पर तीन भागों में विकास किया गया है। इसमें अध्येताओं को जागरूक बनाने वाली तथा यथार्थ जीवन से संबद्ध रोचक एवं ज्ञानवर्धक सामग्री दी गई है।

रुचिरा पुस्तक शृङ्खला अपने नाम के अनुसार रुचिवर्धक सामग्री से विद्यालय स्तर पर छात्र-छात्राओं में संस्कृत भाषा के प्रयोग में कुशलता तो देगी ही साथ ही संस्कृत भाषा तथा साहित्य के प्रति उनमें अपेक्षित अभिरुचि भी उत्पन्न करने में समर्थ होगी, ऐसा विश्वास है।

इसी शृङ्खला का तृतीय पुष्प **रुचिरा तृतीयो भागः** छात्र-छात्राओं के लिए प्रस्तुत है। इसके निर्माण में इस बात का ध्यान रखा गया है कि कक्षा में शिक्षक और विद्यार्थियों

की अन्तःक्रिया प्रश्नोत्तर माध्यम से संस्कृत में ही हो जिससे विद्यार्थी सरल संस्कृत वाक्यों को समझने, बोलने, पढ़ने और लिखने का कौशल विकसित कर सकें।

रुचिरा के इस भाग में कुल 15 पाठ हैं जिनमें छह पद्यात्मक तथा तीन संवादात्मक या नाट्यरूप हैं। शेष पाठ कथात्मक या निबन्धात्मक हैं। पद्यात्मक पाठों में *सुभाषितानि* नैतिक मूल्यों से युक्त प्राचीन कवियों की सुन्दर उक्तियों का संकलन है। सभी पद्य गेय हैं। *अशोकवनिका* शीर्षक पाठ वाल्मीकिरचित रामायण के सुन्दरकाण्ड से संकलित है जिसमें लङ्का में स्थित अशोकवनिका के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन है। *हिमालयः* कालिदास के कुमारसम्भवम् महाकाव्य से संकलित है जो पर्वतराज हिमालय के नैसर्गिक सौन्दर्य का वर्णन है। प्रहेलिका में प्राचीन काल से प्रचलित संस्कृत पहेलियों का संकलन है। इन प्राचीन संस्कृत पद्य-रचनाओं के अतिरिक्त दो आधुनिक संस्कृत गीत भी इस पाठ में संकलित हैं। संस्कृत भाषा की छन्दःसम्पदा की लय एवं गेयता का आनन्द छात्रों को प्राप्त हो, एतदर्थ कुछ नवीन गीत भी इस पुस्तक में दिये गए हैं। *सदैव पुरतो निधेहि चरणम्* स्व. श्रीधर भास्कर वर्णेकर द्वारा रचित उद्बोधन-कविता के रूप में है। जलवाहिनी एक लोकगीत का संस्कृत गीति-रूपान्तर है।

संवादात्मक पाठों में *भगवदज्जुकम्* बोधायन-रचित संस्कृत-प्रहसन से संकलित पाठ है जिसमें परकायप्रवेश का विचित्र और रोचक कथानक है। *सप्तभगिन्यः* उत्तर-पूर्व भारत के सात राज्यों के सांस्कृतिक महत्व दिखानेवाला पाठ है। इसी प्रकार *कः रक्षति कः रक्षितः* में संवाद के द्वारा आधुनिक जीवन में बढ़ते जा रहे प्लास्टिक पदार्थों के उपयोग के कारण उत्पन्न होनेवाली पर्यावरणीय समस्याओं पर दृष्टि डाली गई है।

गद्यात्मक पाठों में *बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता* विष्णुशर्मा द्वारा रचित प्रसिद्ध नीतिकथा पञ्चतन्त्र से संकलित है जिसमें शृगाल तथा मूर्ख सिंह की कथा दी गई है। *धर्मे धमनं पापे पुण्यम्* पाठ एक लोककथा का संस्कृत में आधुनिक रूपान्तरण है जिसमें लोककथा के कौतुक के निर्वाह के साथ प्रत्युत्पन्नमतित्व का रोचक उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। *प्रेमलस्य प्रेमल्याश्च कथा* गुजराती के प्रसिद्ध कथाकार एवं शिक्षाविद् गिजूभाई की एक गुजराती कहानी का संस्कृत रूपान्तर है।

इसमें तीन कथात्मक गद्य-पाठों के अतिरिक्त तीन नवनिर्मित निबन्ध भी हैं, जिनमें *संसारसागरस्य नायकाः* जल प्रबंधन के पारंपरिक ज्ञान से जुड़े उन वास्तुकारों के विषय में भावप्रवण परिचय देता है जिन्हें राजस्थान में गजधर कहा जाता था। *सावित्री बाई फुले* पाठ में, महाराष्ट्र में स्त्री-शिक्षा के तथा दलित चेतना के प्रसार कार्यों में अग्रणी एक प्रसिद्ध महिला की जीवनी दी गयी है। अन्तिम निबन्ध प्राचीन भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक *आर्यभट* के वैज्ञानिकचिन्तन को प्रकाशित करता है। इसे आर्यभट शीर्षक से प्रस्तुत किया गया है।

इस प्रकार पाठों का चयन नयी दृष्टि से संस्कृत के व्यापक रूप को प्रतिनिधित्व देते हुए किया गया है। प्रत्येक पाठ के आरम्भ में पाठ-परिचय देते हुए उसके अन्त में शब्दार्थ, अभ्यास-प्रश्न तथा योग्यता-विस्तार के द्वारा विद्यार्थियों के बुद्धि-विकास एवं भाषा-संरचनात्मक ज्ञान की प्रगति पर ध्यान रखा गया है।

संक्षेप में **रुचिरा तृतीयो भागः** में निम्नलिखित बिन्दुओं पर बल दिया गया है:

- संस्कृत भाषा और साहित्य की समकालीन सन्दर्भों में पहचान
- अभी तक पाठ्य-पुस्तकों में उपेक्षित विषयों को रेखांकित करना
- संस्कृत शब्दों और वाक्यों का शुद्ध उच्चारण
- दिये गये निर्देशों के आधार पर प्रश्नोत्तर एवं प्रश्न-निर्माण का कौशल
- भाषिक तत्त्वों (श्रवण, भाषण, पठन तथा लेखन) का कौशल
- जीवनमूल्यों से युक्त सुभाषित-पद्यों का परिचय
- संस्कृत में सामान्य वार्तालाप कर सकने की क्षमता
- संस्कृत वर्तनी को शुद्ध रूप में जानने और लिखने की क्षमता
- रोचक प्राचीन और आधुनिक कथाओं के द्वारा कल्पना-शीलता का विकास

शिक्षक की भूमिका

किसी पाठ्यक्रम को विद्यार्थियों तक पहुँचाने में शिक्षक की मध्यस्थता तो आवश्यक होती ही है, उसे अत्यधिक सुरुचिपूर्ण, सहज और ग्राह्य बनाने में भी उसकी सक्रिय भूमिका महत्त्वपूर्ण है। अध्यापन की सफलता के लिए एक ओर तकनीकी शैली से

निर्मित पाठ्यपुस्तकों की अपेक्षा रहती है तो दूसरी ओर पाठ्यपुस्तकों में निहित व्याकरण-सम्बन्धी बिन्दुओं और भाषिक तत्त्वों के प्रायोगिक अभ्यास हेतु कुशल अध्यापन-शैली भी अपेक्षित है। आशा की जाती है कि शिक्षकगण प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से भाषा के अपेक्षित कौशलों को विद्यार्थियों की सहभागिता के साथ विद्यार्थियों तक पहुँचाने में अपना बहुमूल्य योगदान प्रदान करेंगे। कथा-प्रसङ्गों तथा गीतों को हृदयङ्गम बनाने के लिए आवश्यकता के अनुसार दृश्य-श्रव्य यान्त्रिक माध्यमों का उपयोग अपेक्षित है। जो पाठ संवाद-परक हैं उनका अभिनय भी विद्यार्थियों से कराया जा सकता है।

इस संकलन को यद्यपि विद्यार्थियों के अनुरूप बनाने का पूरा प्रयास किया गया है तथापि इसे विद्यार्थियों के लिए और भी अधिक उपयोगी बनाने के लिए अनुभवी संस्कृत अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं के बहुमूल्य एवं सार्थक सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

पाठानुक्रमणिका

मङ्गलम्

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं
तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥1॥

-शुक्लयजुर्वेदः(34.1)

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्या-
न्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥2॥

-शुक्लयजुर्वेदः(34.6)

रूपान्तरम्

जो रहता है जाग्रत और दूर दूर तक जाता है,
सोया रह कर भी ऐसे ही जा कर वापस आता है।
दूर दूर वह जाने वाला सब तेजों का ज्योतिनिधान
सदा समन्वित शुभसङ्कल्पों से वह मन मेरा बने महान् ॥1॥

जो जन जन को बागडोर से इधर उधर ले जाता है,
चतुर सारथी ज्यों घोड़ों को इच्छित चाल चलाता है।
सदा प्रतिष्ठित हृदयदेश में अजर और अतिशय गतिमान्
सदा समन्वित शुभसङ्कल्पों से वह मन मेरा बने महान् ॥2॥